EHJ-3-HI

क्या इतिहास का यीशु विश्वास का यीशु है? प्रोग्राम -3

अनाऊंसर: ऐतिहासिक यीशु की खोज आज विख्यात और पढाई के संसार में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हो गया है, और इसने नैशनल मैगज़ीन से बहुत ध्यान आकर्षित किया, जैसे की टाइम, न्यूज़ वीक और यु एस न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट/ साथ ही मिडिया ने जीजस सेमीनार के इन वाक्यों कि बहुत ज्यादा महत्व दिया है, खुद को चुननेवाले लिबरल ग्रुप ने नए नियम की वुद्धिमत्ता को बहुत कम प्रतिशत दिए हैं/

आज हम ऐतिहासिक यीशु के विवादों पर आधारित सवालों के जवाब देंगे, और यीशु के बारे में बहुत ऐतिहासिक सच्चाई हैं ये बात दिखाएंगे, संसार के और नए नियम को छोड़ दूसरे स्रोतों से, जो ये दिखाते हैं कि इतिहास का यीशु मसीही विश्वास का ही यीशु है/

मेरे मेहमान हैं, संसार के महान फिलोसोफर डॉ. गैरी हैबरमास, ये द हिस्टोरिकल जीजस किताब के लेखक हैं, इन्होने म इशिग्न स्टेट यूनिवर्सिटी से पी एच डी की हैं, और दूसरी डॉक्टरेट डिग्री इम्मानुएल कॉलेज, ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लैंड से की हैं, डॉ. हैबरमास लिबर्टी यूनिवर्सिटी के फिलोसोफी और थियोलोजी के डिपार्टमेंट के चेअरमैन हैं, और इन्होने यीशु के जीवन पर 100 से भी ज्यादा लेख लिखे हैं, जो बहुत से बुद्धिमत्ता के जरनल में आएं हैं/

हमारे साथ द जॉन एन्करबर्ग शो के इस एडिशन में जुड जाए और और सीखे कि क्यों यीशु ऐतिहासिक समय में सबसे ज्यादा देखा जानेवाला व्यक्ति है/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्वागत है, आज हमारे पास सबसे मुख्य सवाल है, क्या आप सोचते हैं कि यीशु ने खुद को परमेश्वर समझा? खैर जीजस सेमिनार के कुछ विद्वान दावा करते हैं कि यीशु ने कभी नही कहा कि वो परमेश्वर है/ आगे वो कहते हैं कि बाद में विश्वासियों ने जानबुझकर दूसरी किताबों को दूर किया, दूसरे सुसमाचार जो यीशु को अलग तरह से बताते हैं, उन किताबों से जो अब नए नियम के केनन में पाई जाती हैं, जैसे आप इस प्रोग्राम में देख रहे हैं, कि जीजस सेमिनार दोनों बातों में गलत है/

चलिए देखते हैं, यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया, क्या विश्वासी लोग जीजस सेमिनार के तरीकों का उपयोग कर सकते हैं कि सबूतों का परिक्षण करें,और फिर भी साबित करें कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया है, जानते हैं जवाब है, हाँ, डॉ. गैरी हैबरमास आज हमारे मेहमान हैं, ये फिलोसोफर और इतिहासकार हैं, इन्होने 100 से भी ज्यादा लेख यीशु के जीवन के बारे में लिखे हैं, विश्वासी के नाते, ऐसे बहुत से कारण हैं जिसके कारण उसने ये सारे सन्दर्भ स्वीकार किए कि नए नियम की किताबें सच्ची और आधिकारिक हैं,लेकिन वो जानते हैं कि अविश्वासी विद्वान् इस तरह नही मानते हैं,तो आज ये ऐसे साहित्य से शुरू करेंगे, कि नए नियम के इस भाग को वो स्वीकार करते हैं, वो सोचते हैं कि ये ऐतिहासिक रूप में भरोसेमंद हैं, ये इस साधन का उपयोग करेंगे कि यीशु ने खुद को परमेश्वर कहा था, और डॉ. हैबरमास बहस करते हैं कि चाहे जो भी स्रोत हो, नए नियम के दोष निकालनेवाले कोई भी ले, इन पांचों में आप देखेंगे कि यीशु ने खुद को मनुष्य का पुत्र कहा है, आपको याद होगा कि दानिएल 7:13 और 14 में ये ईश्वरत्व के बारे में बताता है, तो मैं चाहता हूँ कि

आप सुनिए जैसे डॉ. हैबरमास दोष निकालनेवालों की बहस का उपयोग करते हैं, कि दिखाए कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया है/

डॉ. गैरी हैबरमास: हमने पिछले प्रोग्राम का अंत किया था इस मुश्किल सवाल से जो बहुत अजीब दिखता है, कि, हमें सीधा उसका सामना करना चाहिए, और वो कुछ इस तरह है, ये बात नही मानना कि नए नियम में लाल रंग के शब्द यीशु ने ही कहे होगे/ हम कैसे जानेंगे कि यीशु ने ही ये कहा है जब मरकुस ये कहता है, या लूका कहता है, युहन्ना कहता है, या मत्ती कहता है कि उसने कहा/

अब मैंने पिछले प्रोग्राम में कुछ दावे किए थे, कि यीशु ने दावा किया कि वो परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र है/ अब दोष निकालनेवाले विचार से इसे देखते हैं/ जो कि सबसे कम समान बातों को देखेंगे, ऐसा वचन जो केवल किताब नही लेकिन वचन है, ठीक है, नया नियम प्राचीन वचन की किताब है, चलिए दोष निकालनेवालों जैसे सोचते हैं, और चलिए इस मुद्दे को देखते हैं, क्या यीशु ने कभी मनुष्य का पुत्र होने का दावा किया है?

अब सोमवार सुबह का भाग दौड़ का चित्र का उपयोग करते हैं,जो कुछ इस तरह है,जब कोई सोमवार सुबह उठता है, वो कल के फूटबॉल गेम को याद करते हैं, और वो अपना चित्र बनाते हैं, जानते हैं उसने ये किया उसने वो किया, और सच में बहुत से दोष निकालने वाले बुल्टमन के बाद कहते हैं, कि सुसमाचार लिखने वाले अपने शब्द यीशु के मुंह में रखते हैं, सोमवार सुबह का विचार यीशु की शिक्षा में रखते हैं, हम कैसे जानेंगे कि मनुष्य का पुत्र केवल जोड़ी हुई शिक्षा नही है?

खैर, दो महत्वपूर्ण क्रायटेरिया हैं, जो खुद दोष निकालनेवालों ने दिया है, ये दोनों मनुष्य के पुत्र के कहने से पुरे हुए हैं, ये सटीकता का क्रायटेरिया है, अब पहला है बहुत से लोगों की सहमती, यदि एक से ज्यादा स्रोत ये कहते हैं, तो हमारे विचार से ये अधिकारिक होता है, सच में जीजस सेमीनार ने खुद इस क्रायटेरिया का उपयोग किया अपनी किताब 5 गोस्पल्स के शुरू में/

अब ये शिक्षा कि यीशु मनुष्य का पुत्र था, ये उसकी अपनी पसन्दीदा पहचान थी, सुसमाचार के अनुसार और ये पाई जाती है सारे 5 सुसमाचार में जिसे ट्रेडिशनल गोस्पल स्ट्रेटा कहते हैं, और ट्रेडिशनल गोस्पल स्ट्रेटा हैं, मार्क, याने एम, याने जो मत्ती में है वो कही नही, एल याने जो लुका में हैं वो और कही नही है, जॉन जो इस पहले जैसी बातों में हैं जिसे क्यू कहते हैं, 5 स्ट्रेटा, और सोचिए क्या? मनुष्य का पुत्र इन पांचों में है/ याने ये कहना सही होगा कि यीशु ने खुद को यही कहा था/

अब दूसरी बात है कि खैर ये विख्यात नाम है, हम कैसे जानेगे कि ये चर्च ने नही बनाया था, और सच में मनुष्य के पुत्र का अर्थ है, ये तो लिखे गए सुसमाचार में से यीशु का पसन्दीदा शीर्षक था, देखिए, और उन्होंने ये यीशु के मुंह में सन 30 में रखा, देखिए ये तो सच में उसके लिए विख्यात शीर्षक था, जब सुसमाचार लिखे गए थे, ये दूसरी बात है, और इसे असमानता का क्रायटेरिया कहते हैं, यदि यीशु ने यहूदियों से कुछ नही लिया, और यीशु की शिक्षा शुरू के चर्च में नही पाई गई, तो शायद वो सच्ची हो, ये असमानता का बेचिदा क्रायटेरिया है, अब सोचिए, मनुष्य का पुत्र यहूदियों के पैरों तले नही रह सकता था/ उनमे मनुष्य के पुत्र की विचारधारा थी, लेकिन उन्होंने इसे कभी यीशु पर उपयोग नही की/

लेकिन चर्च के बारे में क्या? क्या ये सोमवार सुबह की विचारधारा का अच्छा उदाहारण नही है, उन्होंने अपने पसन्दीदा शीर्षक को यीशु के मुंह में फिर रखा, ये तो सुसमाचार में यीशु के पसन्दीदा शीर्षकों में से एक हैं/ काम नही करेगा/ ये काम नही करेगा क्योंकि यीशु को नए नियम की किसी भी पत्री में मनुष्य का पुत्र नही कहा गया है/ सच में सुसमाचार के बाहर उसे कही भी मनुष्य का पुत्र नही कहा गया, केवल एक जगह छोडकर, और वहां स्वर्ग में उठाए गए मनुष्य के पुत्र के बारे में कहते हैं, पृथ्वी का मनुष्य का पुत्र, पृथ्वी का

यीशु, उसे कभी मनुष्य का पुत्र सुसमाचार के बाहर नही कहा गया, और केवल यीशु के मुंह से हम सुनते हैं,उदहारण के लिए यदि कोई इन शीर्षकों को पढ़ रहा है, यीशु से कहा कि तुम खुद को मनुष्य का पुत्र कहते हो,ये शीर्षक खासकर केवल यीशु के मुंह से ही निकला है, चलिए मैं इस पर थोडा और जोर दूँ, ये सोमवार सुबह का दूसरा शीर्षक नही हो सकता जो यीशु को दिया हो, नही तो ये चर्च का पसन्दीदा शीर्षक हो जाता/ लेकिन ये चर्च में नही पाया गया/

तो सबसे उत्तम सारांश है कि सबसे पहले ये पांचों लेअर में हैं, इसलिए ये यीशु तक जाता है, और दूसरी बात कि ये यहूदियों ने नही दिया, और न चर्च ने इसे दिया, जानते हैं यीशु ने सच में खुद को मनुष्य का पुत्र कहा होगा/ मुझे इसमें समस्या है, क्योंकि दानिएल 7:13 और 14 का मनुष्य का पुत्र, जैसे पहले कहा है ये बहुत मुख्य व्यक्ति है, जो प्राचीन से आता है, पहले से अस्तिव में हहै, पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करता है, यदि यीशु ने होने का दावा करता है, और यदि मसीह के ईश्वरत्व पर भरोसा नही करते हैं, तो आप सबूतों के खिलाफ जा रहे हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब सवाल उठता है कि क्या यीशु ने आकर ये कहा, कि वो परमेश्वर का पुत्र है? सबूत क्या हैं, फिर से डॉ. हैबरमास दोष निकाल्नेवालों के खुद के विचारों को लेकर यीशु के बारे में सबूत बताते हैं, 5 अलग स्रोतों से, और ऐतिहासिक जानकारी से, और ये सब बताते हैं कि यीशु ने कहा कि वो परमेश्वर का पुत्र है/ सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब तीसरा शीर्षक जैसे मैंने कहा था कि ये ईश्वरत्व का शीर्षक है,परमेश्वर का पुत्र, क्या यीशु ने कभी खुद को परमेश्वर का पुत्र कहा है? चलिए यहाँ कुछ वचनों को देखते हैं जो बहुत मदतगार हैं, कि यीशु ने खुद को परमेश्वर का पुत्र कहा, और हम सोमवार सुबह के विचार से नही कह सकते कि ये शुरू के विश्वासियों के समूह के मुंह पर नही रख सकते/

ठीक है, सबसे पहले, मत्ती 11:27 में, और साथ ही लूका में, ये बचन का भाग है जिसे दोष निकालनेवाले कहते हैं क्यू, शुरू में कहे गए डॉक्यूमेंट, जो बहुत शुरू से हैं, वो कहते हैं कि सुसमाचार के एक दशक पहले ये आया, और ये मत्ती 11:27 में हैं और साथ ही यीशु ने कहा, वो कहता है कि मैं तुम पर पिता को प्रकट करने आया हूँ, वो इस तरह से कहता है, वो कहता है कि कोई पुत्र को नही जानता, केवल पिता और कोई पिता को नही जानता, केवल पुत्र, और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे/ अब इस वचन में यीशु परमेश्वर का अद्भुत ज्ञान का दावा करता है, और ये शुरू के क्यू में पाया जाता है, स्ट्रेटा में, जिस तरह दोष निकालनेवाले इसे बताते हैं/ ये मजबूत वचन है/

एक और वचन मरकुस 14:36 है, और यहाँ यीशु परमेश्वर को अब्बा कहता है, इसके बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जिसमे नए नियम के जर्मन विद्वान् जोकिम जेरेमियस ने भी लिखा, और जेरेमीयस कहते हैं कि अब्बा बहुत ही विशेष शीर्षक है, आप इसका उपयोग और कही नही देखते, यहूदी समाज में, इसका अर्थ है पिता, और बहुत व्यक्तिगत किया तो डैडी, लेकिन ये अरेमीक में हैं, ये यीशु की असली भाषा के बारे में बताता है/ ये न भूले नया नियम ग्रीक में लिखा गया और शायद यीशु अरेमीक बोलता था/ और यदि अब्बा अरेमिक है, तो कुछ लोग सोचते हैं कि यहाँ मानो एक खिड़की है, यीशु के असली शब्द के लिए, और इस शब्द का अर्थ क्या है? ये दिखता है कि परमेश्वर उसका पिता है/

याने यहाँ स्टेटमेंट में शब्द है अब्बा, और शायद ये सबसे मजबूत वाक्य है,मरकुस 13:32, यदि आप इसे देखे तो सोचेंगे कि ये अजीब है, ये यीशु के ईश्वरत्व के बारे में वचन नही है, क्योंकि यीशु कह रहा है, अपने आने के समय के बारे में/ उस घड़ी के बारे में कोई नही जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, केवल पिता/ ये इसी कारण मजबूत वचन है कि यीशु ने कहा कि वो पिता का पुत्र है, या परमेश्वर का पुत्र है/ वो ये कहता है कि उसके आने

का समय उसे पता नही, मेरा मुद्दा यही है, यदि चर्च ये बात कहता है, और उन शब्दों को यीशु पर रखता है, तो वो ऐसा क्यों कहेंगे जैसे एक थियोलोजीयन ने कहा कि वो थियोलोजीक्ली शर्मसार हो/ यदि कहना चाहते हैं कि यीशु मनुष्य का पुत्र है, तो वो ये कहे, परमेश्वर का पुत्र, तो वो इसे सीधा कहे, और यीशु ने जवाब देते हुए कहा, देखो, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ, लेकिन नही उसे ये कहना पड़ता है, कि मुझे मेरे आने का समय पता नही/

ये मुश्किल है यदि वो परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आने का समय क्यों नही जानता है, अब ये पारंपरिक तरह से समझा सकते हैं, यीशु का मनुष्य का स्वभाव है/ और उसका ईश्वरीय स्वभाव है, लेकिन ये चाहे जो भी हो, ये वाक्य ऐसे नही दीखता कि ऐसे बनाया गया, क्योंकि ये शर्मसार है, बस कहे कि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है, नही, वो कहते हैं कि पुत्र को उसके आने का समय पता नही/ और ये मुश्किल वाक्य है तो शायद यीशु ने इसे कहा होगा/

यहाँ पर क्यू वाक्य है, और अब्बा शब्द है, और मुझे मेरे आने का समय पता नही वाक्य है/ मैं सोचता हूँ कि इन सब में ये सबूत है कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है/ जैसे सुसमाचार बताता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब फिर हम मुद्दे को बताना चाहते हैं,कि दोष निकालनेवालों के खुद का अनुमान उपयोग करते हुए, आप दिखा सकते हैं कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया है, इसका ये अर्थ नही कि हम उनके अनुमान से सहमत हैं, इसका अर्थ है कि ऐतिहासिक सबूत इतने मजबूत हैं, अविश्वासी मसीह पर विश्वास में आते हैं, इन ऐतिहासिक सबूतों को देखने के बाद, अब डॉ. हैबरमास इन बातों का सारांश बताते हैं, तो सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब हम यहाँ थोडा पीछे जाकर थियोलोजीकल परिभाषा के बारे में देखेंगे और खासकर उस तरीके के बारे में जो मैं यहाँ उपयोग करता हूँ, मेरा मुद्दा ये है, यदि आप पारंपरिक दृष्टिकोण को ले जो सुसमाचार में बताया गया है, रेड लेटर एडिशन, प्रेरित, पौलुस की पत्रियाँ, अवश्य ही कोई भी इस बात पर विवाद नही करेगा कि इन वचनों में यीशु परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है, हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा, और मुर्दों में से जी उठा/

लेकिन मैं अलग अप्रोच लेता हूँ, जिसे मैं कम से कम सत्य का अप्रोच कहता हूँ, जिसे मैं कम से कम विभाजन का अप्रोच कहूँगा, और मैं यही कह रहा हूँ, कि चाहे दोष निकालनेवाले सही भी हो, अपने तरीके के बारे में, और हम कह सकते हैं कि परंपरा के 5 लेअर, इन पारंपारिक सुसमाचार में, जिसमे क्यू भी है, जिसे जर्मन से स्रोत के रूप में लिया गया है, और इसका अर्थ है कि कहे गए डॉक्यूमेंट, दोष निकालनेवाले ये विश्वास करते हैं कि कहे गए डॉक्यूमेंट शुरू के चर्च में बताए गए, ये केवल यीशु ने जो कहा था वो है, वो इसे बहुत गंभीरता से लेते हैं, और ये डॉक्यूमेंट हैं जिसमे मत्ती 11:27 है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है/

हमने क्रीड के बारे में कहा, इवेंजेलिक्ल ऐसे नही सोचते, क्योंकि वो सोचते हैं, ये पूरी किताब, वचन है, तो हम भागों को क्यों देखे?

लेकिन दोष निकालने वाले नए नियम को प्राचीन लिटरेचर मानते हैं, शायद उससे ज्यादा नही, और ये बहुत महत्वपूर्ण है, और ये सही है, कि यदि हमारे पास शुरू के स्टेटमेंट हैं, जो उनकी किताबों के पहले लिखे गए हैं, जैसे कि पौलुस कहता है, जो मुझे पहुंचा था तुम्हें भी पहुंचा दिया, पौलुस कहता है कि प्राचीनों की परंपरा को मानो, हमारे पास ये छोटे अंगीकार हैं, जो उनकी लिखी किताबों के पहले से हैं, मुद्दा है, ये बहुत शुरू से है, जिस पर बहस होती है कि ये प्रेरितों से है, याने इस तरह से दोष निकालनेवाले सबसे कम विभाजन को देखते हैं, तो हमारे पास क्रीड हैं, और क्यू हैं, सुसमाचार से स्रोत हैं, मेरा मुद्दा है, उनका तरीका उपयोग करते हुए भी हम सबसे मजबूत विवाद को देख सकते हैं, यीशु का ईश्वरत्व, मृत्यु, गाढ़ा जाना और जी उठना/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब, जीजस सेमीनार द्वारा सबसे अजीब तरह के किया गया दावा ये है कि ये 27 किताबें जिससे नए नियम का केनन बनता है, ये राजनैतिक कारण के लिए चुना गया, इसलिए नही कि सब विश्वासी इस किताब को जानते और स्वीकार करते थे, जीजस सेमीनार दावा करते हैं कि बाद में विश्वासियों ने जानबुझकर दूसरी किताबों और सुसमाचार को अलग किया, जो यीशु को मत्ती, मरकुस, लूका युहन्ना से पूरी तरह अलग दिखाते थे, एक किताब वो कहते हैं कि जानबुझकर इसे केनन से अलग रखी गई, वो है थोमा का सुसमाचार/ लेकिन डॉ. हैबरमास बताते हैं कि ऐसे दावे सही नही हैं, और थोमा का सुसमाचार सन 150 के पहले उपलब्ध भी नही था/ और नए नियम की किताबे सन 90 के पहले लिखी गई हैं, इसलिए थोमा की किताब केनन का भाग नही हो सकी/ इसे सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: जानते हैं जॉन, ये ऐसा सवाल है जो मुझे सच में उत्साहित करता है, अब हमारे पास सुसमाचार हैं, हमारे पास प्रेरितों के काम के क्रीड के वाक्य हैं, और पौलुस है, दोष निकालनेवाले हमें पौलुस के बारे में पूछते हैं, लगभग 5, 6, 8, पत्रियाँ पौलुस की पत्रियों के नाम से जानी जाती हैं, हमें इस पर बहस करनी पडती है, प्रेरितों के इन छोटी क्रीड पर, और कुछ सुसमाचार में हैं, अब ये अवश्य ही पारंपारिक केनन हैं, और दोष निकालनेवाले दूसरी बातों को बताते हैं, मैं मोडरेट दोस निकालनेवालों के बारे में नही कह रहा हूँ,लेकिन चलिए जीजस सेमीनार के लोगों को देखिए, वो बताना चाहते हैं कि हमने दूसरी किताबों को केनन से बाहर रखा है, राजनैतिक कारण के लिए, और दूसरे स्रोत यहाँ हैं, और हम एक यीशु चाहते थे, तो हमने निश्चित किया की केनन में क्या होगा और क्या नही होगा, और हमने नही जोड़ा सबसे अच्छी केस की बातों को, थोमा का सुसमाचार, ये कहने का डॉक्यूमेंट है, जिसमे यीशु के 100 के लगभग वाक्य हैं, ये क्यू जैसे है, वो यही कहते हैं/

अब हम इसे क्यों बाहर रखेंगे, चलिए थोमा का सुसमाचार ही देखते हैं, उसे केनन से बाहर क्यों रखा? मैं यहाँ कुछ कहना चाहता हूँ, नंबर एक, चाहे आप दूसरी किताबों से कुछ भी करें, फिर भी हमें सबूतों से निपटना होगा, ए, पौलुस, बी. प्रेरितों की क्रीड, सी. सुसमाचार, चाहे दूसरी किताबें हो या न हो, हमें इसे देखना होगा और कुछ भी हो पौलुस शुरू का प्रेरित है, पतरस शुरू का प्रेरित है, यीशु का भाई याकूब शुरू का प्रेरित है, थोमा को कहने की किताब कहा गया लेकिन कोई नही मानता कि ये प्रेरित थोमा ने लिखी थी, याने पारंपारिक केनन एक कारण से है, ये ज्यादा आधिकारिक है, आधिकारिक का क्या अर्थ है? ये उन लोगों ने लिखा जो यीशु के बहुत करीब थे/

अब इस के बारे में क्या कि राजनैतिक चलन था, और हम किताबों को बाहर रखने की कोशिश करते हैं, थोमा जैसी,मैं आपको बताता हूँ, इसमें राजनैतिक बात जुडी नही है, क्योंकि उस समय थोमा जैसी कोई किताब नही थी जिसे केनन से निकाल दे, उन्होंने नही कहा कि मरकुस को रखेंगे और थोमा को बाहर करेंगे, क्योंकि उस समय थोमा सुसमाचार था ही नही/

जीजस सेमीनार तो थोड़े ही हैं,जब वो कहना चाहते हैं कि थोमा सन 50 में आया था, मैं आपको उनके कुछ डॉक्यूमेंट दिखा सकता हूँ, जब उन्होंने कहा कि शायद थोमा सन 90 में था,और फिर सन 50 में, जानते हैं ये वहां क्यों आता है, उन्हें कुछ डाक्यूमेंट्स चाहिए कि इसे सन 50 में रखे और अपनी बातों को मनवा ले/

सब कहते हैं कि थोमा तो दूसरी सदी का है, इसके लिए किसी ने थोमा के विरुद्ध निर्णय नही लिया इसका कारण है, सन 50, 60, 80, 90 में, क्योंकि थोमा नही था/ ज्यादातर विद्वान् यही मानते हैं/

याने कोई पुराना केनन नही जहाँ लोग कह सके, बस यही है, हम ये लेंगे बाकि नही लेंगे, इसके लिए मुख्य कारण है, इवेंजलिक्ल मानो इस पर हंसते हैं, यदि हम कहे कि हमारे पास किताब है, हाँ ये 100 साल बाद

आई, दूसरी सदी में, हमें ये पसंद है, हम इसे केनन में रखेंगे, जानते हैं, वो कहेंगे जानते हैं, 100 साल याने ये सन 150 का समय है, ये यीशु के लिए शुरू के स्रोतों के लिए बहुत देरी की बात है, थोमा ऐसा ही है/

केनन में इसी कारण इसका इनकार किया गया, क्योंकि ये देरी से आया, इसलिए नही कि उन्हें राजनीति पसंद थी, उन्हें यीशु पसंद नही था, बहुत से यीशु वहां पर थे, ये नही दिखा सकते, हम बिना अधिकार का यीशु नही दिखा सकते, ऐसा नही जिसे उसके प्रेरितों ने नही दिखाया, जैसे पौलुस, पतरस, याकूब/ ये वहां नही क्योंकि वो शारीरिक रुप में नही थे, मैं थोमा के सुसमाचार पर कह रहा हूँ/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब आप अविश्वासी को कैसे दिखाएंगे कि नए नियम की 27 किताबें सच्ची हैं और यीशु के बारे में ऐतिहासिक किताबें हैं, कि उसे यीशु के जीवन के आँखों देखे गवाह द्वारा स्वीकार किए गए हैं, जैसे कि प्रेरित और ये प्रेरितों को जाननेवाले विश्वासियों द्वारा अधिकारिक किताबों के रूप में जानी जाती थी, मजबूत ऐतिहासिक सबूत हैं जो इन किताबों में हमारी बुनियाद को मजबूत बनाते हैं, तो सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: मैं शुरू के केनन के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ, किताबों के दो ब्लॉक्स, हम इन्हें देखनेवाले हैं, सुसमाचार और प्रेरित, प्रेरित को लूका के दूसरा भाग के रूप में देखते हैं, ये 5 किताबें हैं, पौलुस की पत्रियाँ, दोष निकालनेवाले हमें 5, 6, 8 और उदार मतवादी पौलुस की 13 पत्रियों को मानते हैं, लेकिन किताबों के इन दो ब्लॉक्स को स्वीकार किया गया, पहली सदी के अंत में ही, कोई भी 325 नाय्सी की राह नही देख रहा था, कैसे कह सकते हैं, शुरू के 3 मसीही लेखकों को ही लीजिए, क्लेमेन्ट, लगभग सन 95 में, इगनेशियस सन 107 में, पोलीकार्प सन 110 में, 9 छोटी पत्रियाँ, और वो पौलुस के शब्द कहते हैं, उसके बारे में कोट करते हुए कहते हैं, पौलुस और उसकी पत्रियों को, लगभग 100 बार, वो उसकी 13 में से 12 पत्रियों के बारे में बताते हैं, जानते हैं क्या बाहर रखते हैं, फिलेमोन को, कल्पना कीजिए कि क्यों, केवल 1 अध्याय है, थियोलोजिक्ल नही हैं, लेकिन पौलुस को उत्साहित कहा गया, उसे प्रेरित कहा गया, उसके लेख बताए गए, लगभग सन 100 के आस पास, शुरू के आधिकारिक लेखकों के द्वारा, सुसमाचार, वो सुसमाचार और प्रेरितों के बारे में बताते हैं, 100 से भी ज्यादा बार, ये दो साहित्य, सुसमाचार और प्रेरित, पौलुस की पत्रियाँ, 12 या 13 जो भी हो, ये नए नियम के केनन के अंत में सन 100 के लगभग ही प्रोत्साहित और स्वीकार की गई/

थोमा के थिसेस में जाइए, इसी कारण ये नही आया क्योंकि तुलना की कोई बात नही थी, सुसमाचार और प्रेरितों के जैसे स्पर्धा के लिए, कुछ भी नही था, कोई प्रेरित नही थे, जो पौलुस के स्थर के हो, जो इस तरह से पत्री लिख सके, और हमारे पास इसके 200 उच्चारण हैं, बिलकुल पहली सदी के अंत में ही/ दोस्तों ये बहुत बहुत शुरू का ही साहित्य है/

मैं और भी कुछ जोड़ता हूँ, क्लेमेन्ट सन 95, इगनेशियस सन 107 में, पोलीकार्प सन 110 में, उन्होंने सुसमाचार और पौलुस के बारे में कहा, 200 से भी ज्यादा बार,जानते हैं, उन्होंने थोमा के सुसमाचार के बारे में कुछ नही कहा, क्यों, क्योंकि केनन से निकालना चाहते थे, नही, थोमा वहां था ही नही, वो ये नही जानते थे, उन्होंने इसे नही कहा, इसलिए हमारे पास बहुत से सबूत हैं, जो आधिकारिक ने नियम, सुसमाचार, प्रेरित और पौलुस की पत्रियों के लिए/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाउनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाे एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्डद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ॠ ख्ॠद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2017 ॠच्ङक्ष्